प्रस्तुतकर्ता:-
वेद प्रकाश शर्मा
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय , नरौरा

4. क्रिया – जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का पता चले, उसे क्रिया कहते हैं; जैसे- लिखना, पढ़ना, बोलना, स्नान करना आदि।

धातु – क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है। इसी में 'ना' लगाने पर क्रिया का सामान्य रूप बनता है।

धातु + ना = सामान्य रूप

पढ़ + ना = पढ़ना

लिख + ना = लिखना

(क) कर्म के आधार पर क्रिया भेद –

अकर्मक क्रिया- हँसाना, रोना, भागना, दौड़ना, कूदना, उछलना, बैठना आदि।
सकर्मक क्रिया- पढ़ना, लिखना, खाना, पीना, बनाना, बुनना, देना, तोड़ना आदि।

(ख) बनावट के आधार पर क्रिया भेद

1. मुख्य क्रिया – टूट गया, रोता रहा, चल दिया, खा लिया आदि।
2. संयुक्त क्रिया – कर लिया, सो गया, काट लिया, गाता गया आदि।
3. प्रेरणार्थक क्रिया – लिखवाना, कटवाना, बनवाना, पढ़वाना, चलवाना।
4. नामधातु क्रिया – फ़िल्माना, शरमाना, लजाना, हिनहिनाना आदि।
5. पूर्वकालिक क्रिया – पढ़कर, खाकर, नहाकर, पीकर, देखकर आदि।

काल-क्रिया होने के समय को काल कहते हैं।

भेद		उदाहरण
वर्तमान काल	—	पढ़ता है, लिख रहा है, जाता है, उड़ रहे हैं, आ रही है आदि।
भूतकाल	—	पढ़ती थी, लिख रही थी, जाती थी, उड़ रहे थे, आ रही थी आदि।
भविष्यत् काल	—	पढ़ेगा, लिखेगा, जाएगा, उड़ेंगे, आएगी, आएँगी आदि।

ब – अविकारी शब्द या अव्यय

अव्यय वे शब्द होते हैं, जिन पर लिंग, वचन, काल, पुरुष आदि का कोई असर नहीं होता है।
जैसे – प्रातः, अभी, धीरे-धीरे, उधर, यहाँ, परंतु, और, इसलिए आदि।

अव्यय के भेद – क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक तथा निपात अविकारी शब्द हैं।

1. क्रियाविशेषण–क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे- बहुत, धीरे-धीरे, उधर, प्रातः आदि।

भेद		उदाहरण
कालवाचक क्रियाविशेषण	—	कभी-कभी, अभी, प्रातः, सायं, आजकल, प्रतिदिन आदि।
रीतिवाचक क्रियाविशेषण	—	धीरे-धीरे, सरपट, अचानक, भली-भाँति, जल्दी से आदि।
स्थानवाचक क्रियाविशेषण	—	उधर, ऊपर, नीचे, इधर, बाहर, भीतर, आसपास आदि।
परिमाणवाचक क्रियाविशेषण	—	थोड़ा, बहुत, कम, अत्यधिक, जितना, उतना आदि।

2. संबंधबोधक – जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर वाक्य के अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ संबंध बताते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।
जैसे – विद्यालय के पास बगीचा है।
मंदिर के सामने फूल खिले हैं।
मुझे सुमन के साथ बाज़ार जाना है।
इसके अतिरिक्त, के अलावा, के भीतर, के बारे में, के विपरीत, के बदले, की तरह, की तरफ, के बाद आदि संबंधबोधक हैं।

3. समुच्चयबोधक – जो अव्यय दो शब्दों, दो पदबंधों या दो अव्ययों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक कहते हैं; जैसे – और, तथा, किंतु, परंतु अथवा आदि।

भेद	उदाहरण		
(क) समानाधिकरण समुच्चयबोधक	जोड़ने वाले	—	और, तथा, एवं
	विरोधदर्शक	—	किंतु, परंतु, लेकिन, मगर
	विकल्पबोधक	—	अथवा, या, नहीं तो, अन्यथा
	परिणामदर्शक	—	इसलिए, अतः, फलतः, अन्यथा
(ख) व्यधिकरण समुच्चयबोधक	हेतुबोधक	—	क्योंकि, इसलिए, इस कारण
	संकेतबोधक	—	यद्यपि-तथापि, यदि...तो।
	उद्देश्यबोधक	—	ताकि, जिससे, कि
	स्वरूपबोधक	—	अर्थात् मानो, यानि कि

4. विस्मयादिबोधक – जिन अव्यय शब्दों से आश्चर्य, हर्ष, घृणा, पीड़ा आदि भाव प्रकट हों, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे – ओह, अरे, अहा, हाय आदि।

भाव		विस्मयादिबोधक अव्यय
आश्चर्य (विस्मय)	—	अरे!, ओह!, हैं!, क्या!
उल्लास, हर्ष	—	वाह!, अहा!, खूब!, बहुत अच्छा!
शोक, पीड़ा	—	हाय!, आह!, उफ!, हायराम!
घृणा, तिरस्कार	—	छिः!, छिक्कार!, हट!
चेतावनी	—	हटो!, बचो!, सावधान!, खबरदार!
स्वीकृति	—	अच्छा!, ठीक!, बहुत अच्छा!
प्रशंसा	—	शाबास!, सुंदर!, बहुत बढ़िया!
संबोधन	—	हे!, अरे!, सुनो!

5. निपात-वे अव्यय शब्द जो किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ पर बल लगा देते हैं, उन्हें निपात कहते हैं। ही, तो, भी, तक, मात्र, भर आदि मुख्य निपात हैं।